Research Paper

Volume : 5 | Issue : 5 | May 2016 • ISSN No 2277 - 8179 | IF : 3.508 | IC Value : 69.48

''ग्रामीण एवं षहरी किषोर बालक एवं बालिकाओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन''

Social Science

KEYWORDS :

श्रीमती प्राची शमा	(सहायक प्राध्यापक) हरीशंकर शिक्षा महाविद्यालय,रायपूर (छ.ग.)
श्रीमती स्वाती जाज	(सहायक प्राध्यापक) मौलाना आजाद शिक्षा महा.बिलासपुर (छ.ग.)

ABSTRACT

विद्यालय वह स्थान है जहां शिक्षकों द्वारा छात्रों में सृजनात्मकता स्तर को उपलब्धि हेतु कुछ मुलभूत योग्यतायें,कौश्लों तथा अचार व्यवहार विकसित करने के लिए सुव्यवस्थित प्रयास किये जाते है। शिक्षा के माध्यम से ही सृजनात्मकता को व्यवसायिक रूप देना संभव है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा 9वी के ग्रामीण –शहरी 2 विद्यालयों तथा 100,100 किशोर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का का अध्ययन किया गया। प्रमापीकृत उपकरण से मापने पर यह पाया गया कि ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का स्तर उच्च हैं।

प्रस्तावना –

उदिप्त भारत की तस्वीर बदलने की जिम्मेदारी शिक्षा,शिक्षक, विद्यालय, परिवार,पाठयक्रम एवं समाज की है। शिक्षा के माध्यम से बालक का सर्वागीण विकास सम्भव हैं एवं विद्यालय ही वह स्थान है जहॉ शिक्षको द्वारा छात्रों में सृजनात्मक स्तर को उपलब्धि हेतु आवश्यक कुछ मूलभूत योग्यताये ,कौशलों तथा आचार–व्यवहार विकसित करने के लिए सुव्यवस्थित प्रयास किये जाते है। शिक्षा के माध्यम से ही सृजनात्मकता को व्यवसायिक रूप देना संभव है। इससे तकनीकी प्रगति नयी क्षमताएं तथा व्यवसायिक अभिरूचि को सही दिशा मिलती है।

''सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को व्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है''। को एण्ड को राष्ट्र का उन्नत भविष्य उस राष्ट्र के प्रगतिशील विद्यार्थियों पर निर्भर करता है अतः विद्यार्थियों का समुचित विकास आवश्यक है। विद्यार्थियों की रूचि, आकांक्षा स्तर एवं व्यवसायिक रूचि उसके भविष्य की सफलता या असफलता को तय करते है। अतः छात्र के साथ–साथ शिक्षक को भी सृजनात्मकता के तमाम पक्षों का ज्ञान होना आवश्यक हैं।

सृजनात्मकता एक बहु गुण है जो व्यक्ति में भिन्न–भिन्न रूपों में विद्यमान रहता है तथा जिसमें समस्या समाधान करने, प्रवाह, लचीलापन, मौलिकता, जिज्ञासा व दृढता के तत्व निहित होते है। सृजनात्मकता के स्तर को विकिसित करना बालक के विकास के लिए आवश्यक है अतएव इस क्षेत्र में गंभीरता से विचार करने शोध की आवश्यकता है।

शोध उद्देश्य –

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता स्तर का अध्ययन करना।
2. किशोर बालक एवं किशोर बालिकाओं की सृजनात्मकता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. 'किशोर विद्यार्थियो की व्यवसायिक रूचि एवं सृजनात्मकता स्तर के बीच सार्थक सह–संबंध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ –

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
2. किशोर बालक एवं किशोर बालिकाओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।'

3. किशोर विद्यार्थियो की व्यवसायिक रूचि एवं सृजनात्मकता स्तर के बीच सार्थक सह–संबंध पाया जायेगा।

शोध विधि –

शोध अध्ययन हेतु सामान्य सर्वेक्षण विधि (Formative Survey Method) का प्रयोग किया गया है।

जनसख्या एवं न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध में कक्षा 9 वीं के छात्र–छात्राओं का समूह जनसंख्या (Population) हैं। बिलासपुर जिले के ग्रामीण 2 एवं शहरी 2 शासकीय विद्यालयों का चयन 'उद्देश्यात्मक यादृच्छिक न्यादर्श विधि' से 100 विद्यार्थी शहरी एवं 100विद्याथी ग्रामीण कुल 200 विद्यार्थी नयादर्श के रूप में चयनित किया गया।

शोध चरांक –

1.स्वतंत्र चर– .सृजनात्मकता ,2.साहचर – किशोर विद्यार्थी ।

शोध उपकरण – प्रस्तुत शोध हेतु निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया है :

1.सृजनात्मकता मापनी – डॉ.बी.के पासी,प्रोफेसर एण्ड हेड ,देवी अहिल्या यूर्निवसिटी, इन्दौर।

विश्लेषण एवं निष्कर्ष –

H01 '' ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

तालिका क.–1.1

क्र.	सृजनात्मकता स्तर	N	M	S.D	df	't' Value	सार्थकता	स्तर
1.	शहरी विद्यालय के किशोर विद्यार्थी	100	22.72	4.27	98	0.2048	सार्थक अन्तर नहीं है।	P<0.01
2.	ग्रामीण विद्यालय के किशोर विद्यार्थी	100	27.56	4.41				

विवेचना –

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र का हो या शहरी क्षेत्र के। उनकी मानसिकता पर क्षेत्र या परिवेश का उल्लेखनीय प्रभाव नहीं दिखाई दे रहा। ग्रामीण विद्यालयों की सीमा शहरी विद्यालयों से संलग्न है। साथ ही संप्रेषण माध्यमों का प्रभावित क्षेत्र पहले से बढ़ा है फलतः सृजनात्मकता में अंतर परिलक्षित नहीं हो रहा है। किन्तु मध्यमान के आधार पर स्पष्ट होता है ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता अधिक है। हर किशोर बालक अपने भविष्य को लेकर आज गंभीर दिखाई देता है। वह जहॉ भी अध्ययन करे अपनी कल्पना को रंग भरने विचार करता है और उसके अनुसार कार्य भी। फलतः परिकल्पना क.2 स्वीकृत की जाती है।

H02 ''ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता स्तर में अंतर नहीं होता।''

तालिका क.–1.2

क्र.	सृजनात्मकता स्तर	N	M	S.D	df	't' Value	सार्थकता	स्तर
1.	शहरी विद्यालय के किशोर विद्यार्थी	100	22.72	4.27	98	0.2048	सार्थक अन्तर नहीं है।	P<0.01
2.	ग्रामीण विद्यालय के किशोर विद्यार्थी	100	27.56	4.41				

विवेचना –

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र का हो या शहरी क्षेत्र के। उनकी मानसिकता पर क्षेत्र या परिवेश का उल्लेखनीय प्रभाव नहीं दिखाई दे रहा। ग्रामीण विद्यालयों की सीमा शहरी विद्यालयों से संलग्न है। साथ ही संप्रेषण माध्यमों का प्रभावित क्षेत्र पहले से बढ़ा है फलतः सृजनात्मकता में अंतर परिलक्षित

नहीं हो रहा है। किन्तु मध्यमान के आधार पर स्पष्ट होता है ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता अधिक है। हर किशोर बालक अपने भविष्य को लेकर आज गंभीर दिखाई देता है। वह जहॉ भी अध्ययन करे अपनी कल्पना को रंग भरने विचार करता है और उसके अनुसार कार्य भी।फलतः परिकल्पना क्र.2 स्वीकृत की जाती है।

H03 'किशोर विद्यार्थियो की व्यवसायिक रूचि एवं सृजनात्मकता स्तर के बीच सार्थक सह–संबंध पाया जायेगा।'

तालिका क्र.–1.3

क्र.	चर	N	df	'r' value	सार्थकता	स्तर
1.	व्यवसायिक रूचि	100	198	0.1863	सार्थक सहसम्बध है।	सधारण कोटि का धनात्मक सहसम्बध है।
2.	सृजनात्मकता स्तर	100				

विवेचना –

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सृजनात्मकता एवं व्यवसायिक रूचि के मध्य सार्थक धनात्मक सह–सम्बन्ध है। तथापि सहसम्बन्ध का स्तर उच्च नहीं है। ध नात्मक सहसम्बन्ध से इस बात की पृष्टि होती है कि विद्यार्थी की सृजनात्मकता, व्यवसायिक अभिरूचि को प्रभावित करती है। सृजनशील विद्यार्थी का चिन्तन, विचार व्यवसाय की दृष्टि से उच्च स्तर होने की संभावना अधिक होती है।

सुझाव –

शोध परिकल्पनाओं के परीक्षण से यद्यपि क्षेत्र के आधार पर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं व्यवसायिक अभिरूचि में विशेष अंतर परिलक्षित नहीं हुआ। सृजनात्मकता एवं व्यवसायिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बध पाया गया परन्तु इसका स्तर साधारण है। अंतःस्पष्ट होता है सृजनात्मकता के स्तर को उच्च करनें की आवश्यकता है। साथ ही व्यवसाय के प्रति उनकी सोच में परिवर्तन करने की आवश्यकता है।

- ☐ विद्यार्थियों में सृजनात्मता के विकास के लिए पाठ्यकम में मनावैज्ञानिक प्रयोगों जैसे स्वयं करके सीखना,स्मृति पर आधारित प्रयोगों का समावेश होना चाहिए।
- ☐ सामान्य शिक्षा के साथ–साथ व्यवसायिक शिक्षा भी दी जानी चाहिए।
- ☐ जिन विद्याालयों में ऐसी शिक्षा दी जा रही है वहीं समुचित साधन हो।
- ☐ शिक्षक को चाहिए की विद्यार्थियों की विभिन्न गतिविधियों द्वारा सृजन क्षमता को पहचाने एवं उसे विकसित करने का प्रयास करे।
- ☐ शिक्षक विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशील हो एवं धैर्य के साथ उनके साथ व्यवहार कर उन्हें एक सहीं व्यवसाय चयन करने में परामर्श दे।

बालक के व्यक्तित्व निर्माणक तत्वों में सृजनशीलता एवं व्यवसायिकता की भावना की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। सृजनात्मकता बालक की उपलब्धि, आंकाक्षा, व्यवसायिक सोच को प्रभावित करती हैं। शोध इस बात की पृष्टि करता है। यद्यपि प्रस्तुत शोध द्वारा क्षेत्र के आधार पर सृजनात्मकता का व्यवसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है किन्तु ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों का स्तर अपेक्षाकृत शहरी विद्यार्थियों से उच्च पाया गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Arrora P.N.-1988- Educational and vocational aspiration of students of class XII parathion of an interview schedule-A,Pilot study (Fifith Survey of Edu,Res-Vol –II page1508).
2. Datt K.L.1989 - Differences in scientific creativity among high school students(V Survey of Edu.Vol II page-1042).
3. .भटनागर डॉ.आर.पी – शिक्षा अनुसंधान ईगल बुक्स पब्लिकेशन्स।
4. कपिल डॉ.एच. के. – अनुसंधान के मूल तत्व,हर प्रसाद भार्गव।
5. सिंह,अरूण कुमार – शिक्षा मनोविज्ञान।
6. पाठक पी.डी. – शिक्षा मनोविज्ञान।
7. कुलश्रेष्ठ एस.पी. – शिक्षा मनोविज्ञान।